इति वैद्यकरसेन्द्रसारसंग्रहे पाण्डुरोगाधिकारे ॥ * ॥ * ॥)

पाण्डुः, स्त्री, (पंड़ि+कुः। निपातनात् दीर्घत्वम्।) माषपर्णी। इति शब्दचन्द्रिका॥ माषाणी इति भाषा॥ पाण्डुवर्णस्त्री। इति मुग्धबोधव्याकरणम्॥

पाण्डुकः, पुं, (पाण्डु+संज्ञायां कन्।) पाण्डुरोगः। पाण्डुराजा। इति शब्दरत्नावली॥ पाण्डुवर्णः। इति हलायुधः॥

पाण्डुकण्टकः, पुं, (पाण्डुवर्णानि कण्टकान्यस्येति।) अपामार्गः। इति राजनिर्घण्टः॥

पाण्डुकम्बलः, पुं, (पाण्डुवर्णः कम्बलः नित्यकर्म्मधारयः।) श्वेतप्रावारः। प्रस्तरभेदः। इति मेदिनी। ले,१७०॥ पाण्डुवर्णकम्बलः। इति भरतः॥

पाण्डुकम्बली, [न्] पुं, (पाण्डुवर्णकम्बलेन परिवृतः। पाण्डुकम्बल+"पाण्डुकम्बलादिनिः।"४। २। ११। इति इनिः।) पाण्डुवर्णकम्बलावृतरथः। इत्यमरः। २। ८। ५४॥ पाण्डुकम्बलयुक्ते, त्रि॥

पाण्डुतरुः, पुं, (पाण्डुवर्णस्तरुरिति कर्म्मधारयः।) धववृक्षः। इति राजनिर्घण्टः॥

पाण्डुनागः, पुं, (पाण्डुवर्णो नाग इव। यद्वा, नाग इव पाण्डुरिति राजदन्तादिवत् समासः।) पुन्नागवृक्षः। इति शब्दारत्नावली॥ (पाण्डुवर्णो नाग इति विग्रहे।) श्वेतहस्ती श्वेतसर्षपश्च॥

पाण्डुपत्री, स्त्री, (पाण्डु पत्रमस्या इति जातित्वात् ङीप्।) रेणुका। इति राजनिर्घण्टः॥ (पर्य्यायोऽस्या यथा,—

"रेणुका राजपुत्री च नन्दिनी कपिला द्विजा।
भस्मगन्धा पाण्डुपत्री स्मृता कौन्ती हरेणुका॥
इति भावप्रकाशस्य पूर्व्वखण्डे प्रथमे भागे॥)

पाण्डुपृष्ठः, त्रि, (पाण्डु पृष्ठं यस्य।) पाण्डुवर्णपृष्ठयुतः। अलक्षणः। इति त्रिकाण्डशेषः॥

पाण्डुफलः, पुं, (पाण्डूनि फलानि यस्य।) पटोलः। इति राजनिर्घण्टः॥

पाण्डुफला, स्त्री, (पाण्डु फलमस्या इति टाप्।) चिर्भिटा। इति राजनिर्घण्टः॥

पाण्डुभूमः, त्रि, (पाण्डुर्भूमिरत्र इति। "कृष्णोदकपाण्डुसङ्ख्यापूर्व्वाया भूमेरजिष्यते।" ५। ४। ७५। इत्यस्य सूत्रस्य वार्त्तिकोक्त्या अच् समासे।) पाण्डुवर्णभूमियुक्तदेशः। यथा,—

"पाण्डूदक् कृष्णतो भूमिः पाण्डूदक् कृष्णमृत्तिका॥"
इति हेमचन्द्रः॥

पाण्डुमृत्, स्त्री, (पाण्डुः पाण्डुवर्णा मृत् मृत्तिका यत्र।) पाण्डुभूमिः। पाण्डुर्मृत् इति कर्म्मधारये।) खटी। इति राजनिर्घण्टः॥

पाण्डुरः, पुं, (पाण्डुरस्यास्तीति। पाण्डु+"नगपांशुपाण्डुभ्यश्च।" ५। २। १०७। इत्यस्य सूत्रस्य वार्त्तिकोक्त्या रः।) श्वेतपीतमिश्रितवर्णः। तद्वति, त्रि। इत्यमरः। १। ५। १७॥ (यथा, भागवते। ८। ८। ३।

"तत उच्चैःश्रवा नाम हयोऽभूच्चन्द्रपाण्डुरः।
तस्मिन् बलिः स्पृहाञ्चक्रे नेन्द्र ईश्वरशिक्षया॥")

कामलारोगः। इति शब्दरत्नावली॥ श्वित्ररोगे, क्ली। इति हलायुधः॥

पाण्डुरङ्गः, पुं, (पाण्डुराणि अङ्गान्यस्येति।) फलशाकविशेषः। पाटराङ्गा इति भाषा॥ अस्य गुणाः। क्रिमिश्लेष्मपित्तनाशित्वम्। तिक्तत्वम्। लघुत्वञ्च। इति राजवल्लभः॥

पाण्डुरद्रुमः, पुं, (पाण्डुरः श्वेतः श्वेतपीतमिश्रितवर्णो वा द्रुमो वृक्षः।) कुटजवृक्षः। इति त्रिकाण्डशेषः॥ (अस्य पर्य्यायो यथा, भावप्रकाशस्य पूर्व्वखण्डे प्रथमे भागे॥

"कुटजः कूटजः कौटो वत्सको गिरिमल्लिका।
कालिङ्गः शक्रशाखी च मल्लिका पुष्प इत्यपि।
इन्द्रो यवफलः प्रोक्तो वृक्षकः पाण्डुरद्रुमः॥")

पाण्डुरपृष्ठः, त्रि, (पाण्डुरं पृष्ठमस्य।) लक्षणहीनः। इति हेमचन्द्रः॥ पाण्डुवर्णपृष्ठयुक्तश्च॥

पाण्डुरफली, स्त्री, (पाण्डुरं पाण्डुवर्णं फलं अस्याः। जातित्वात् ङीष्।) क्षुद्रक्षुपविशेषः। तत्पर्य्यायः। पाण्डुः २ धूसरा ३ वृत्तबीजका ४ भूरिपलितदा ५ पाण्डुफली ६। अस्या गुणाः। शिशिरत्वम्। गौल्यत्वम्। कृच्छ्रास्रदोषपित्तमूत्राघातनाशित्वम्। बल्यत्वम्। वृष्यत्वञ्च। इति राजनिर्घण्टः॥

पाण्डुरा, स्त्री, (पाण्डुरस्त्यस्या इति ततष्टाप् च।) माषपर्णी। इति राजनिर्घण्टः॥ पाण्डुरवर्णा च॥

पाण्डुरागः, पुं, (पाण्डुरं पाण्डुरत्वं आ सम्यक्रूपेण गच्छतीति। गम+डः। यद्वा, पाण्डुः रागोऽस्येति।) दमनकवृक्षः। इति राजनिर्घण्टः॥ पाण्डुवर्णयुक्ते, त्रि॥

पाण्डुरेक्षुः, पुं, (पाण्डुरः श्वेतवर्ण इक्षुः।) श्वेतेक्षुः। इति राजनिर्घण्टः॥

पाण्डुलेखः, पुं, (पाण्डुर्लेखः।) पाण्डुलिपिः। मुसविदा इति पारस्यभाषा॥ यथाह व्यासः।

"पाण्डुलेखेन फलके भूमौ वा प्रथमं लिखेत्।
न्यूनाधिकन्तु संशोध्य पश्चात् पत्रे निवेशयेत्॥
फलकं काष्ठादिपट्टकम्।" इति व्यवहारतत्त्वम्॥

पाण्डुलोमशा, स्त्री, (पाण्डूनि लोमानीवाङ्गान्यस्त्यस्याः।) माषपर्णी॥ इति रत्नमाला॥ पाण्डुवर्णलोमयुक्ता च॥

पाण्डुलोमा, स्त्री, (पाण्डु लोम यस्याः।) माषपर्णी। इति जटाधरः॥ पाण्डुवर्णलोमयुक्ते, त्रि॥

पाण्डुशर्करा, स्त्री, (पाण्डुः शर्करा इव यस्यां रोगावस्थायामित्यर्थः।) रोगविशेषः। यथा, गारुड़े १८२ अध्याये।

"पिष्टं वै मालतीमूलं ग्रीष्मकाले समाहृतम्।
साधितं छागदुग्धेन पीतं शर्करयान्वितम्॥
हरेन्मूत्रनिरोधञ्च हरेद्वै पाण्डुशर्कराम्॥"

पाण्डुशर्म्मिला, स्त्री, द्रौपदी। इति त्रिकाण्डशेषः॥

पाण्डुसोपाकः, पुं, वर्णसङ्करविशेषः। स तु चाण्डालाद्वैदेह्यां जातः॥ (अस्योत्पत्तिविवरणम्। यथा, मनौ। १०। ३७।

"चण्डालात् पाण्डुसोपाकस्त्वक्सारव्यवहारवान्।
आहिण्डिको निषादेन वैदेह्यामेव जायते॥"
"वैदेह्यां चण्डालात् पाण्डुसोपाकाख्यो वेणुव्यवहारजीवी जायते।" इति तट्टीकायां कुल्लूकभट्टः॥ क्वचित् पाण्डुसौपाकोऽपि पाठो दृश्यते। यथा, महाभारते। १३। ४८। २६।

"चण्डालात् पाण्डुसौपाकस्त्वक्सारव्यवहारवान्॥")

पाण्यः, त्रि, (पण व्यवहारस्तुत्योः+ण्यत्।) स्तुत्यः। स्तवनीयः। ("पण्या गौः व्यवहर्त्तव्येत्यर्थः। पाण्यमन्यत् स्तुत्यर्हमित्यर्थः।" इति "सिद्धान्तकौमुद्याम्। ३। १। १०१। इत्यस्य सूत्रस्य वृत्तौ व्याख्यातम्॥)

पातः, पुं, (पत+घञ्।) पतनम्। (यथा, महाभारते। ३। १३३। २६।

"वड़वे इव संयुक्ते श्येनपाते दिवौकसाम्।
कस्तयोर्गर्भमाधत्ते गर्भं सुषुवतुश्च कम्॥")

त्राते, त्रि। इति मेदिनी॥ (पातयति चन्द्रसूर्य्यौ छादयतीति। पत+णिच्+अच्।) राहुः। यथा,—

"ताड़ितः खदहनैर्द्दिनसङ्ख्यः
षट्कषट्कशरहृत्फलमांशाः।
खं ध्रुवे कुमुदिनीपतिपातो
राहुमाहुरिह केऽपि तदेव॥"
इति सिद्धान्तशिरोमणिः॥

पातकं, क्ली, (पातयति अधो गमयति दुष्क्रियाकारिणमिति। पत+णिच्+ण्वुल्।) नरकसाधनमिति यावत्। तत्पर्य्यायः। अशुभम् २ दुष्कृतम् ३ दुरितम् ४ पापम् ५ एनः ६ पाप्मा ७ किल्बिषम् ८ कलुषम् ९ किल्बम् १० कल्मषम् ११ वृजिनम् १२ तमः १३ अंहः १४ कल्कम् १५ अघम् १६ पङ्कम् १७। इति हेमचन्द्रः॥ तत्तु नवविधं यथा। अतिपातकम् १ महापातकम् २ अनुपातकम् ३ उपपातकम् ४ सङ्करीकरणम् ५ अपात्रीकरणम् ६ जातिभ्रंशकरम् ७ मलावहम् ८ प्रकीर्णकम् ९। इति प्रायश्चित्तविवेकः॥ एषां विवरणं तत्तच्छब्दे द्रष्टव्यम्॥ कायवाङ्मनःकृतानि दशविधपापानि यथा,—

"अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः।
परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं स्मृतम्॥
पारुष्यमनृतञ्चैव पैशुन्यञ्चापि सर्व्वशः।
असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्व्विधम्॥
परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिन्तनम्।
वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधं कर्म्म मानसम्॥"
इति तिथ्यादितत्त्वम्॥

पातङ्गिः, पुं, (पतङ्गस्य सूर्य्यस्यापत्यमिति। पतङ्ग+"अत इञ्।" ४। १। १५। इति इञ्।) शनैश्चरः। इति शब्दरत्नावली॥